11

कहाणी
बरसगांठ

मुरलीधर व्यास

कहाणीकार–परिचै

मुरलीधर व्यास रौ जनम संवत् 1955 री चैत सुदी बारस नै बीकानेर में हुयौ। राजस्थानी सिरजण रा समरपित दसकत हा। आप राजस्थानी री केई विधावां मांय रचाव कियौ। छप्योड़ी पोथ्यां– बरसगांठ, इक्कैवाळौ, जूना जीवता चितराम, उज्ज्वल, घूमरे, राजस्थानी कहावतां (दो भाग) सरावण जोग रैयी है। आपरी राजस्थानी री सांतरी सेवा रौ मोल आंकता थकां विद्वानां आपनै राजस्थानी रा शरत्चन्द्र अर राजस्थानी कहाणी रा भीष्म पितामह रौ आघमांन दियौ। आप धुन रा धणी, सफल नाटककार, समाज–सुधारक अर प्रगतिसील विचारधारा रा हिमायती हा।

पाठ–परिचै

संकलित कहाणी में नान्है मोती री बरसगांठ रै दिन कळपतै घीसू री दीन–दसा रौ दरसाव है। कमठाणै सूं धाकौ नीं धकै जणां आवळ–कावळ सरतां माथै रुपिया उधार लेवण री लाचारी, घर में थड़ी करतै ऊंदरां रा दरसाव अर ऊपर सूं खंधी चुकावण रा तकादा.... करै तौ कांई करै? अठीनै तौ जियां–तियां रुपिया उधार लेय'र मोती री बरसगांठ मनावै अर बठीनै अैन बगत माथै खंधी ऊगावण सारू चोटा घुमावता मींडा महाराज आय पूगै। धणी–लुगाई घणा ई गिड़गिड़ावै, पग पकड़ै, पण जम रै दूतां नै भलांई दया आय जावै, मींडा महाराज नै दया नीं आवै। जद घर में कीं भी चीज–बस्त नीं मिळै तौ आखर मोती रै हाथां रा कड़िया खोस लेवै। कहाणी रौ अंत घणौ मारमिक है।

बरसगांठ

मेह–अंधारी रात। डांफर चालै। कोढियौ सियाळै रौ मास। रात री आठ ई बजी कोयनी, पण किसौ कोई मिनख रौ जायौ गळी में दीस जाय। घीसू धूजतौ–धूजतौ राम–राम करतौ घर में बड़ियौ। मोती री मां बोली– "आ ई कोई आवण री बेळा है? ओढण नै सरीर माथै पोळियो'र आ सरदी! टैमसर घर में आय जाया करौ। मोती रोंवतौ–रोंवतौ, काका–काका करतौ, हणां ई सूतौ है।"

घीसू बोल्यौ– "कमठाणै सूं तौ टैमसर ई छुट्टी हुयगी ही। पण अेक–दो जागां पईसड़ा लावण नै गयौ परौ। रोजीना आजकल–आजकल करै। पईसड़ा हाथ आय जावै तौ मोती रै रूईदार कोट–सूथण कराय दूं अर ओढणै सारू सिरख बणावण रौ कपड़ौ आपणै वास्तै ई लाऊं। अबकै तौ सियाळै रौ काम खराखरी है।

औ फिकर छोड'र पैली रोटी–पाणी भेळा तौ हुवौ" –आ कै'र मोती री मां उठी अर बाजरी रा दो मोटा–मोटा सोगरा अर अेक कटोरी में लूण–मिरचां री चटणी ला'र आगै मेल दी। घासफूस बाळ'र थोड़ो–सेक जगाय दियौ। लाई खड़खड़ीज्योड़ौ तौ आयौ ई हौ,

सेक लागौ जद जी में जी आयौ। रोटी खावतौ–खावतौ बोल्यौ– "सियाळै कोढियै मास नै कण मांग्यौ हौ? औ तौ भगवानां रै ई काम रौ है। कैवत में ई कैवै है– सियाळौ सेभागियां, दो'रौ दोजखियां।"

रोटी खा'र घीसू गूदड़ां में बड़ग्यौ। मोती री मां जागां–जागां सूं रूई भेळी हुयोड़ी, जाळी–झरोखां वाळी झरझरकंथा ऊपर सूं न्हाख दी। गोडा गळै में घाल'र घीसू पड़ रयौ।

मोती री मां अेक फाटौ–सो पूर ओढ'र सेक कनै बैठी–बैठी ऊन कतरण लागी। भाग री बात, चिमनी नै अबार ई बैर काढणौ हौ। घीसू बोल्यौ– "चिमनी में दिन थकां तेल भरा लांवती...।"

"भरा कठै सूं लांवती। गट्टा महाराज बोल्या कै आगला पईसा दे जावौ अर तेल ले जावौ।"

"तौ मीठै तेल रौ दियौ ई कर लेती।"

"मीठै तेल री तौ काल पूड़ी बणाय ली।"

घीसू दुखी होय'र बोल्यौ– "कांई करां, कांई नीं करां? कनै फूटी कोडी कोयनी।"

मोती री मां कैयौ– "मींडा महाराज कनै सूं खंधी कढायलौ।"

"जाणती–बूझती कियां अणसमझ बणै है? गैली बातां करै है? माराज री आगली खंधी तौ चूकी ई कोयनी। पचास रै पेटै पांच–पांच री सगळी पांच खंध्यां अबार तांई पूगी है।"

"तौ चीठी फोराय लो। पाछी पचास री लिख दौ।"

"पण पल्लै कांई पड़सी? लारली वेळा 40/– देय'र 50/– री चीठी लिखायी ही। अबकै भळै 50/– ऊपर 10/– काट लेसी। रुपिया तौ गिणती रा 15/– ई हाथ आसी।"

"परसूं मोतीड़ै री बरसगांठ है। कांई घी–गुड़ तौ लावणौ ई पड़सी। माताजी री पूजा हुसी। जतनां रौ काम है।"

"गरीबां रा जतन रामजी करसी। तनै तौ पूजा री चिंता है पर म्हनै औ फिकर है। कठैई माराज छाती माथै आय चढिया तौ कांई करसूं।

(2)

अठीनै सी दिन दूणौ चमकण लागौ, बठीनै घीसू नै सी–रखै रै कपड़ां री चिंता चौगणी लागी, कनै अखत रा बीज ई नहीं। आज कमठाणै री छुट्टी हुयी जद रामूड़ै कारीगर नै सागै ले'र मनजी माराज रै घरै गयौ अर खंधी ऊपर रुपिया मांग्या। मनजी माराज गोमुखी में हाथ घालियां बैठा जप कर रैया हा अर सागै–सागै खंधीवाळां सूं रोड़–झोड़ करता जांवता हा। माळा रा मिणिया ई सागै–सागै गुड़कता हा। घीसू री बात सुण'र बोल्या– "ना रे भाई! थां सूं कुण पानौ घालै! थांरा रुपिया आवणा बडा चीढा है।"

आखर रामूड़ै री सिफारस माथै कंईक ढळ'र बोल्या– "देख भाई! गोथळी खोलाई रा, कबूतरां रै दाणै रा अर चीठी लिखाई रा लागैला। इस्टाम रा पईसा न्यारा है।"

घीसू बोल्यौ– "माराज! गरीब हूं, म्हनै इण तरै तौ पोसा...।"

"जणै दौड़ जा सीधी ई नाक री डांडी। किण तनै पीळा चावळ भेज्या हा। अरे रांड रा काचा! धरम री जड़ सदा हरी रैवै है। धरम रा पईसा काढतां जी ऊपर कियां आवै है? डूबग्यौ सनातन धरम!"

"ठीक माराज! आप फरमावौ ज्यूं–ई मंजूर है।"

"पण हूं तौ तनै जाणूं कोयनी। जामनी घलावणी पड़ैला।"

"जामनी, रामूजी घाल देसी।"

25/– री चीठी लिखीजी जिकै में 5/– काटै रा, 1/– गोथळी खोलाई रौ, आठ आना कबूतरां रै दाणै रा, अर चार आना चीठी लिखाई र अर इस्टाम रा पईसा काट'र कुल जमा 18/– घीसू रै पल्लै पड़िया।

(3)

घीसू घणौ ई सोच–विचार'र खरच करयौ पण तोई कपड़ां–लत्तां रा 15/– खरच हुयग्या। बाकी मोती री बरसगांठ खातर गुड़–घी लावण में लागग्या। पाछा हुयग्या बाबैजी री जात।

मोती री मां माताजी बणाया, पखाळ करायौ, छांटौ घालियौ, नारेळ बधारियौ, धूप–दीप कर'र लापसी रौ भोग धरियौ। हाथ जोड़'र अरदास करी– "मां! मिनखां कुसळ राखै, छोरै नै सो'रौ राखै, अबकळै आयी जकै सूं सवायी आयै।" मोती रै लिलाड़ में टीकौ काढियौ अर घीसू नै जीमण रौ कयौ।

घीसू बोल्यौ– "म्हनै तौ अबार सी–कंपा लागै है। गुदड़ी न्हाख दै। थे जीमलौ। म्हारै तौ ताव उतरियां बात।"

मोती री मां घणी कैवा–सुणी करी जद माताजी नै छांटौ घाल'र मूंडौ अैंठण नै बैठौ ई हौ कै इत्तै में मींडा माराज आय'र घोटौ घुमायौ ई। गरजना करी– "ला रे घीसूड़ा! खंधी रा रुपिया ला!"

घीसू रै हाथ रौ कवौ हाथ में ई रैयग्यौ। लाचारी सूं बोल्यौ– "अबकळै माफी दौ माराज! अगलै महीनै दोनूं खंधियां सागै ई दे देसूं।"

"देसी कठै सूं? बाप रै सिर सूं! ठाकरद्वारौ चवड़ौ घणौ! आगलौ–फागलौ तौ हूं जाणूं कोयनी। दावौ ठरकाय दूंला। पछै माथै हाथ देय'र रोवैला। झख मार'र काकोजी–काकोजी कै'र रुपिया धरणा पड़ैला।"

मोती री मां बोली– "माराज! हाथ जोडू हूं, अबकळै माफी बगसौ। आज टाबर री बरसगांठ...।"

"बळगी रांड बरसगांठ! बेटा माल उडावै अर लैणायतां नै अंगूठौ बतावै है।"

"माराज! माल कठै पड़िया है। टुकड़ा मिळ जासी तौ ई घणा है।"

"ना भाई! कुंई होवौ, हूं तौ आज लाखां हाथां ई टळूं कोयनी। रुपिया लेय'र ई जासूं।"

"घीसू, माराज रा पग झाल'र बोल्यौ– माराज! अबकळी बार माफी बगसाय दौ। आगलै महीनै..."

"माफ कुण करै कुट्टण! म्हारै तौ आयां–गयां ई काम चालै है। रांझट मत कर! बेगा रुपिया दै।"

"कनै होंवता माराज तौ आपरा अबार तांई कांयनै राखता? कनै तौ फूटी कोडी ई कोयनी।"

"तौ कांई चीज झलाय दै। रुपिया देय'र पाछी ले जाईजै।" इयां कैय'र माराज तीनां नै सिर सूं पगां तांई देख्या पण किणी रै सरीर माथै चांदी री तीब ई को देखी नीं। मोती रै हाथां में दो कड़िया चांदी रा देखिया।

"ला ला! बस, अब मोड़ौ मत कर!"

"म्हारै कनै तौ चीज न बस्त। आ काया पड़ी है, ले जावौ। आगलै महीनै आप रा कांई भाव ई रुपिया राखूं कोयनी? अबकळी बार माफ करौ, फेर..."

"फेर म्हारै करमां रा, जद ई तौ तैं–सूं पानौ पड़ियौ। बेटौ उलटौ रंग जमावै है। चीज–बस्त कियां कोयनी? साळै री नीयत ई तांबौ है। देवै कठै सूं!" आ कैय'र झट मोती रा हाथ पकड़िया ईज। मोती मां–बाप सांम्ही देख'र रोवण लाग्यौ– "मां! मां! काका! काका!.. औ... म्हारा कड़िया... औ... कड़िया... कड़िया रे... ओ मां... ओयरे...!"

घीसू बैठौ–बैठौ देखतौ रयौ। मां मूंधौ माथौ कियां जमीं माथै पड़ी ही।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

डाँफर=तेज ठंडी हवा। कोढ़ियो=पीड़ादायक। धूजता=कांपता। बड़ियो=भीतर आयौ, मांय आयौ। पोळियो=पतळौ कपड़ौ। हणां=अबार। खराखरी=कठिनाई, उचित। सोगरा=बाजरै री रोटी। सेक=ताप। लाई=बिचारौ, लाचार। खड़खड़ीजियोडी=ठंड सूं कांपती। दोरो=अबखौ, मुसकल। सेभागीयां=भागवाळा। दोजखियां=नरक जैड़ौ जीवण जीवणिया। झरझरकंथा=जूनी फाटियोड़ी, लीरालीर। पूर=बोदा गाभा। आगला=पैलां रा। खंधी=किस्त। अबार तांई=आज तांई। चिठी=उधारी रौ कागद। पाछी=फेर। अखत रा बीज=कनै कीं नीं होवणौ। रौड़=झोड़=वाद–विवाद। पानी घालै=संबध बणावै। चीडा=दौरा है। पोसा=निभना। जामनी=गारण्टी। बाबैजी री जात=कुछ भी न बचना। पखाळ कराई=प्रक्षलन। सीकंपा=सियाळै री धूजणी। ताव=बुखार। मूंडौ अैठण=जीमण नै बैठणौ। घोटो घुमायो=आय धमक्या। कवौ=कौर। अगला=आगै रा। लाखां हाथां ई टळू नईं=किणी तरै नीं मानूं। तीब=तुस जित्तौ गैणौ। मोड़ौ=अबेळो। पानो पड़ियौ=साबको पड़्यौ। उल्टौ रंग जमावै=उलटी धौंस दिखावणौ। नीयत ई तांबो=खोटी नीयत। मूंधो=ऊंधौ। डांफर=सियाळै री ठंडी हवा। कोढियौ=दुख देवण वाळौ। धूजता=कांपता। हणां=अबार, इण घड़ी। खराखरी=पक्की बात, साची। सेक=ताप। जतन=रिछ्या, सांभ'र राखणौ।

सवाल

विकळपाऊ पड्ूत्तर वाळा सवाल

1. मोती री मा चिमनी में तेल क्यूं नी भरा सकी–
   (अ) घर में तेल नीं हौ (ब) दुकान बंद ही
   (स) पैली रा पईसा देवणा हा (द) खुद कनै पईसा नीं हा
   ( )

2.मनजी माराज गोमुखी में हाथ घालियां कांई कर रैया हा–
   (अ) माळा फेर रैया हा (ब) जप कर रैया हा
   (स) भजन कर रैया हा (द) सुमरण कर रैया हा
   ( )

3. मींडा माराज घीसू सूं कांई मांग्यौ–
   (अ) पईसा (ब) गहणा
   (स) खंधी (द) परसाद
   ( )

4. मां! मां! काका! कैवतौ मोती क्यूं रोय रैयौ हौ–
   (अ) पीड़ सूं (ब) मार सूं
   (स) कड़िया खौसणै सूं (द) कड़िया गुमणै सूं
   ( )

साव छोटा पड्ूत्तर वाळा सवाल

1. घीसू घर में बड़ियौ जणै कांई चालै ही?
2. घीसू कमठाणै सूं घरां मोड़ौ क्यूं आयौ?

3. चीठी लिखियां पछै घीसू रै कितरा रिपिया पल्लै पड़िया?
4. मोती री कड़िया खोसता देख मोती अर घरवाळी री कांई दसा हुई?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. मजूरी रा पईसा हाथ आयां घीसूं कांई लावणी चावतौ?
2. 'धरम री जड़ सदा हरी रैवे।' आ बात कुण किणनै अर कद कैयी?
4. मोती री मां हाथ–जोड़ मां सूं कांई अरदास करी?
5. मनजी गरीबां नै उधार देय'र किण तरै वसूल करता?
6. मोती मां–बाप सांम्ही देख'र क्यूं रोवण लागौ?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1 कहाणी रा मूळ–तत्त्वां रै आधार माथै 'बरसगांठ' कहाणी री समीक्षा करौ।
2. 'घीसू री जूंण गरीब री जूंण रौ साचो चितराम है।' कहाणी रै कथ रै आधार माथै वरणन करौ।
3. 'बरसगांठ' आधुनिक कहाणी री सरुआती कहाणी है। आधुनिक कहाणी सूं इणरौ आंतरौ सपस्ट करौ।
4. कहाणी 'बरसगांठ' संवेदना सूं भरपूर कहाणी है।' कथन नै ध्यान में राखता थंका कहाणी रै मकसद रौ खुलासौ करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) ''जाणती–बूझती कियां अणसमझ बणै है। गैली बातां करै है। माराज री आगली खंधी तौ चुकी ई कोयनी। पचास रै पेटै पांच–पांच री सगळी पांच खंध्यां अबार जाई पूगी है।'' तौ चीठी फोरायलौ। पाछी पचास री लिखवाय देवौ।

(ब) मनजी माराज गोमुखी में हाथ घालिया बैठा जप कर रैया हा अर सागै–सागै खंधीवाळा सूं रोड़–झोड़ करता जावता हा। बोलिया–''ना रे भाई। थां सूं कुण पानो घालै। थां रा रिपिया आवणा बडा चीढा है।''

(स) आ कैय'र झट मोती रा हाथ पकड़िया ईज। मोती मां–बाप सांम्ही देखर रोवण लागौ– ''मा! मा! काका! काका!–ओ–म्हारा कड़िया–ओ–कड़िया–कड़िया रे–ओ मां–ओय रे।'' घीसू बैठौ–बैठौ देखतौ रैयौ! मां मूंधौ माथौ कियां जमीं माथै पडी ही।

16

कहाणी
उडीक

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित

कहाणीकार परिचै

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित रौ जनम संवत् 1981 में बाड़मेर जिलै रै खांडप गांव में हुयौ। आप राजस्थानी रा चावा–ठावा अर लूंठा कथाकार हा। आपरी कहाणियां आज रै जनजीवण अर राजस्थानी संस्कृति री छिब रै सागै ग्रामीण परिवेस नै दरसावै। आपरा प्रकासित कहाणी–संग्रै है– 'पुन्न रौ काम', 'रातवासौ', 'अमर चूनड़ी', 'प्रभातियौ तारौ', 'मऊ चाली माळवै' अर 'अधूरा सुपना'। इणरै टाळ आप केई पोथ्यां रौ राजस्थानी में अनुवाद करियौ। आप राजस्थानी री मासिक पत्रिका 'माणक' में बरसां लग उप संपादक रैया। कहाणी–संग्रै 'अधूरा सुपना' माथै आपनै साहित्य अकादमी, नई दिल्ली रौ राजस्थानी पुरस्कार मिळ्यौ। इणरै अलावा ई आपनै मोकळा पुरस्कार मिळ्या अर केई साहित्यिक संस्थावां सूं सम्मानित हुया।

पाठ–परिचै

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित री 'उडीक' घणी मरम वाळी कहाणी है। छोटा टाबरां नै बिलखता छोड'र मां रौ बेटैम मरण मिनख रा कांधा भांग देवै। छोटै टाबर किसनू रै विस्वास नै नीं टूटण देवण मांय मामोसा–भईसा–बैन रौ जीव चौबीसूं घड़ी आकळ–वाकळ रैवै। मां मांदी है, अेक दिन वा जरूर आवैला, उणरी उडीक मांय नित रोज गांव रै धोरै माथै बस री टैम जाय'र ऊभ जावणौ, मां रा जूना गाभां में लपेटीज नै मां रै ओरणै सागै अंगूठौ चूंघतै किसनू रै सोवण रौ चितराम इतरौ मरमाळू है कै पाठक रौ हियौ भरीज जावै, आंख्यां डबडबाईज जावै। आ कहाणीकार री सै सूं बडी सफळता है। आ राजस्थानी री सिरै कहाणियां मांय सूं अेक है।

उडीक

यूं रामगढ़ बीसूं बार आयौ गयौ हूं, पण अबकाळै उठै जावणौ घणौ आंझौ लाग्यौ। मन जाणै कियांई होवण लाग्यौ। पै'ली जद कदैई रामगढ़ जावण रौ मौकौ मिळतौ, मन में घणी हूंस रैवती, च्यार दिनां पैली'ज अेक अणबोलणी खुसी मन में भरीज जावती अर मन हर बखत भरियौ रैवतौ। मोटर में बैठतौ तद तौ मोटर री चाल रै सागै वा खुसी पण तरतर बधतीज जावती अर मोटर रा हच्चीड़ा रै सागै उणमें पण उछाळा आवता रैवता। पण आज री हालत सफा उल्टी ही। गाडी सूं उतरनै मोटर कांनी रवांनै व्हियौ तौ पग इसा भारी लाग्या जाणै मण–मण वजन बंध्यौ व्है। उदास मन सूं वांनै कियां ई ठिरड़तौ–ठिरड़तौ मोटर में आयनै बैठ्यौ तौ बैठता पांण अेक जोर रा हचीड़ा सागै वा स्टाट व्हैगी। जांणै उणनै वैम हौ कै म्हैं आळांणौ नीं कर दूं अर पाछौ रवांनै नीं व्है जाऊं।

काचा मारग पर धूड़ रा गोट उठता रह्या अर हच्चीड़ा रै सागै नैना–नैना गांव लारै

छूटता रह्या। अबै तर–तर रामगढ़ ढूकड़ौ आवण लाग्यौ। पै'ली पनजी चव्हाण रौ बेरौ आवैला अर पछै अरणां वाळौ सेरियौ। लांबा सेरिया रै दोनूं कांनी कोरा अरणा इज अरणा। सेरिया बारै निकळतां ई तौ रामगढ़ रा झाड़का दीखण लाग जावैला अर पछै तौ पूगतां अेक चिलम भरै जितरी जेज लागैला। मोटर ऊभी रैवै उठै खासी भीड़ व्हैला। कोई रै मोटर में बैठनै आगै जावणौ व्हैला तौ कोई किणी रै सांम्ही आयौ व्हैला। पाछली साल म्हैं आयौ जद धापू अर किसनू दोन्यूं बैन–भाई म्हारै सांम्हा आया हा। किसनू तौ म्हनैं देखतां पांण ताळियां बजाय–बजायनै नाचण लागग्यौ हौ– मामोसा आया रे... मामोसा आया...। अर धापू तौ पकड़ धाबळियौ हाथ में अर दड़ीछंट घरां दौड़गी ही– बाई नैं बधाई देवण नै कै उणरौ वीरौ आयग्यौ है।

खद्दीड़... खद्दीड़... हब्बीड़... हब्बीड़। मोटर रा छाजला में मिनखां रा छोटा–मोटा दाणा उछळ–उछळनै नीचा पड़ता हा। जितरै तौ अेक जोर रौ हच्चीड़ौ लाग्यौ अर म्हारी झेर टूटी। रामगढ़ आयग्यौ हौ। मोटर ठमतां ई लोग–बाग चढण–उतरण लाग्या। म्हैं ई नीचै उतरियौ अर बेग उठायनै रवांनै व्हियौ। भीड़ सूं बारै निकळ्यौ तौ धड़ा माथै ऊभा अेक टाबर माथै निजर पड़ी। मन में वैम व्हियौ किसनू तौ नीं है कठैई? ना–ना, औ किसनू हरगिज नीं व्है सकै। बाल बिखस्योड़ा, हाथां–पगां पर मैल रा धारड़ा जम्योड़ा अर सरीर माथै फगत अेक मैलौ–सीक कुड़तियौ। मूंढै में हाथ रौ अंगूठौ घाल्यां वौ खरी मीट सूं मोटर कांनी देखै हौ। म्हैं थोड़ौ नैड़ौ गयौ। अरे! औ तौ सागण किसनू ईज दीसै। म्हारै अचूंभा रौ तौ ठिकाणौ ई नीं रह्यौ। म्हैं उणनै धीरै–सीक बतळायौ– किसनू? पण उण ध्यांन इज नीं दियौ। वौ तौ अंगूठौ चूसतौ, आंख्यां फाड़–फाड़नै मोटर कांनी देखै हौ।

म्हैं फेरूं जोर सूं कह्यौ– "भाणूं!" अबकै वौ म्हारै कांनी देख्यौ। मोटी–मोटी आंख्यां, सफेद–सफेद कोयां में नैनी–नैनी कीकियां, गालां माथै आंसुवां रा टेरा सूखोड़ा। छिन–भर तौ वौ देखतौ ईज रह्यौ। पछै अेकदम मुळकनै बोल्यौ– "मामोसा, थे आयग्या! म्हैं तौ रोज थांरै सांम्ही मोटर माथै आवूं।"

"जणै ईज तौ म्हैं थनैं मिळण नै आयौ हूं भाणूं।"

"पण म्हारी बाई कठै मामोसा? भाईसा तौ रोज कैवै कै अबै उणनैं सफाखाना सूं छुट्टी मिळ जावैला अर थारा मामोसा उणनै लेयनै आवैला।" वौ अठी–उठी देखनै विलखौ पड़ग्यौ अर म्हनै जबाब देवणौ भारी पड़ग्यौ। म्हैं अबै उण भोळा कमेड़ा नै कांई जबाब देवतौ। उण रा विस्वास नै कियां खंडत करतौ। जिण उम्मेद री डोर माथै वौ जीवै हौ उणनै कियां तोड़तौ। जिण वरत रै सहारै वौ वेरा में उतरियोड़ौ हौ, उणनै कियां बाढतौ। म्हैं थोड़ौ संभळनै कह्यौ– "बाई हाल मांदी है भाई, वा सफा ठीक नीं व्है जितरै उणनै सफाखाना सूं छुट्टी मिळै कोनी। म्हैं उणनै गोदी में ऊंचाय लियौ।

"कदै छुट्टी मिळैला? थे सेंग कूड़ा बोलौ हौ, म्हनै चिगावौ।" वौ आंती आयनै रोवण लागग्यौ। म्हैं उणनै छाती रै चेप नै बुचकारण लागग्यौ हौ तौ हूचकै भरीजग्यौ। म्हैं नीठ पोटाय–पुटूय नै छांनौ राखियौ।

"देख थूं तौ समझणौ है भाणूं। बाई कितरा दिन घरै मांदी पड़ी री, अबै दवा नीं करावै तौ सावळ कीकर व्है बता? ठीक व्हैतां ई म्हैं उणनै लेयनै आवूंला। अेक देख, थारै वास्तै वा थैली भरनै रमेकड़ा भेज्या है अर केवायौ है कै इणां मेंसूं धापू नै अेक ई मत दीजै।"

अबै जावतौ उणनै थोड़ौ थावस बाधौ। वौ आंख्यां पूंछतौ बोल्यौ, "म्हनै ई बाई कनै ले चालौ नीं मामोसा। म्हैं उणनै कोई दुख नीं दूंला। बाई बिना म्हनै कीं चोखौ नीं लागै। अठै म्हनै भाईसा लड़ै अर धापूड़ी रांड म्हनै

रोज कूटै। बाई तौ म्हारै हाथ ई नीं लगावती।''

''थूं नानीजी कनै चालैला किसनूं? वै थारौ घणौ लाड राखैला अर उठै थनै कोई नीं कूटैला।''

म्हारी बात उणनै जची कोनी। थोड़ी ताळ वौ ठैरनै बोल्यौ– ''म्हारै तौ बाई कनै जावणौ है, नानीजी कनै नीं जावणौ।'' पछै म्हारौ हाथ पकड़नै फेर बोल्यौ, ''मामोसा, छोरा म्हनै कैवै कै थारी बाई तौ मरगी।''

मन में अेक धक्कौ–सो लाग्यौ, तौ ई म्हैं कह्यौ– ''सफा कूड़ बोलै नकटा, वै थनै यूं ई चिड़ावै।''

घरां आयनै उणनै नीचौ आंगणै उतार दियौ। पण हे राम! इण घर री आ हालत। कठै तौ वौ बुहारियौ–झाड़ियौ, नीपियौ– गूंपियौ देवता रमै जिसौ कूंपळी व्है जिसौ घर अर कठै औ भूतखानौ। ठौड़–ठौड़ कचरा रा ढिगला, आंगणा रा नीबड़ा हेटै बींटां रा थोकड़ा, अेंठवाड़ा वासण, उघाड़ौ पणेरौ अर भरणाट करती माखियां। सगळा घर माथै अेक अजाणी उदासी, अेक अणबोली छियां।

म्हैं धापू नै हाकौ कियौ तौ वा पाड़ौस रा घर सूं दौड़ी आई। पण सदैई का ज्यूं आयनै पगां में बाथ नीं घाली। दस बरस री छोरी छः महीना में ईज जाणै डोकरी व्हैगी ही। सूक्योड़ौ मूंडौ, मैला–मैला गाभा, माथौ जाणै सूगणियां रौ माळौ। म्हैं माथै हाथ फेरियौ तौ वा छिबरां–छिबरां रोवण लागी। नीठ बोली राखी।

हाथौहाथ घर री सफाई करनै नींबड़ा री छियां में मांचा माथै बैठ्यौ तौ मन जाणै कियांई व्हैग्यौ। घर रा खूणा–खूणा सूं बाई री याद जुड़ियोड़ी ही। यूं लाग्यौ जाणै वा रसोड़ा में बैठी रसोई बणाय री है अर अबार म्हनै बुलाय लेला। जाणै वा गवाड़ी में बैठी गाय दूय री है अर अबार किसनू नै गिलास लावण रौ हाकौ कर दैला। जाणै ढाळिया में बैठी घरटी फेर री है अर अबार वीरौ गावणौ सरू कर दैला।

म्हनै वीरौ सुणण रौ अर बाई नै वीरौ गावण रौ कितरौ कोड हौ, जिणरौ कोई पार नीं। म्हैं आवतौ जितरी वार लारै पड़ जावतौ– ''बाई, अेकर तौ वीरौ सुणाय दे।'' अर वा झीणा कंठ सूं सरू कर देवती; आज ई इण अळस दोपार री पौर में यूं लाग्यौ जाणै वा सांम्ही बैठी वीरौ गावै है–

बागां में बाज्या जंगी ढोल
शहरां में बाजी सुरणाई जी
आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर
चूनड़ तौ ल्यायौ रेसमी जी

... ...

मेलूं तौ छाब भरीजै
तोलूं तौ तोळा तीस जी
ओढूं तौ हीरा खिर जाय
भरूं तौ हाथ पचास जी

... ...

बागां में बाज्या जंगी ढोल
शहरां में बाजी सहनाई जी
आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर
चूनड़ तौ ल्यायौ रेशमी जी

... ...

लारली साल म्हैं आयौ जद बैठौ–बैठौ वीरौ सुणतौ हौ अर बाई गावती ही, उण बखत न जाणै गावतां–गावतां कांई व्हियौ सो उणरौ कंठ धूजण लाग्यौ अर आंख्यां भरीजगी। म्हैं उणरौ हाथ पकड़नै कह्यौ– ''ओ क्यूं बाई?'' तौ बोली–''कांई नीं रे वीरा, मन जाणै यूं ई कियां ई व्हैग्यौ। सोच्यौ थूं रोज वीरौ गवावै पण कुण जाणै, सागण काम पड़सी जद म्हैं रैस्यूं कै नीं?''

''थूं इसौ खराब सोचै ईज क्यूं?'' म्हैं कह्यौ।

''यूं ई रे भाई, इण काची काया रौ कांई भरोसौ, आज है अर काल नीं। दूजौ जिणनै जिण चीज री हूंस घणी व्है, वा पूरी नीं व्हिया करै।''

गळा में कांटा–सा अटकण लाग्या अर नींबड़ा माथै डोड कागला बोलण लाग्या– क्रां... क्रां... क्रां। किसनू कठी गयौ? रसोड़ा

में धापू अेकली बैठी साग वंदारती ही, उणनै पूछ्यौ तौ जाण पड़ी कै कनला कमरा में सूतौ व्हैला। जायनै देख्यौ, आंगणा माथै फाटा–तूटा गाभा बिछायनै सूतौ हौ अर बाथ में अेक ओरणौ भरयोड़ौ हौ। म्हैं खासी ताळ ऊभौ–ऊभौ उण रा भोळा–ढाळा चेहरा नै देखतौ रह्यौ। वौ रैय–रैयनै आपरा नैना–नैना होठां नै भेळा करनै ऊंघ में ई बोबौ चूंघतौ व्है ज्यूं बसड़–बसड़ करतौ हौ।

धापू बोली, "औ रात रा यूं ईज सोवै मामोसा। जे बाई रा कपड़ा इणनै ओढण–बिछावण नै नीं देवां तौ इणनै ऊंघ ई नीं आवै। अेक रात औ भाईसा साथै सूतौ तौ सगळी रात जगियौ। औ कैवै कै इण कपड़ां में म्हनै बाई री बास आवै, जिण सूं ऊंघ झट आय जावै। इण वास्तै ईज भाईसा अै कपड़ा धुपावै कोनी।

म्हनै म्हारी पीळकी गाय रौ वौ लवारियौ याद आयग्यौ जिकौ फगत बीसेक दिन रौ हौ कै उणरी मा मरगी। तीन दिन तांई वौ ठाण सूंघतौ रह्यौ, जठै उणरी मा बांधीजती। छेवट चौथै दिन डेंडाड़ करतै प्राण छोड दिया। अर औ लवारिया जिसौ ईज अबोध किसनू जो फगत पांच बरस रौ है अर इणरी जामण मरगी, उणनै जे मायड़ रा परसेवा री बास सूंघ्यां बिना ऊंघ नीं आवै तौ इणमें इचरज री बात ई कांई?

थोड़ी ताळ में वौ जाग्यौ तौ म्हैं उणनै कह्यौ– "चाल भाणूं, थनैं सिनान कराय दूं। देख थारै डील माथै कितरौ मैल जमग्यौ है अर कुड़तौ किसौक मैलौ घाण व्हैग्यौ है। थनैं सूग ई नीं आवै भोळा? पै'ली तौ थूं कितरौ साफ–सुथरौ अर फूटरौ फर्रौ रैवतौ। अबै थारै कांई व्हैग्यौ है?" वौ अेक सबद ई नीं बोल्यौ, चुपचाप म्हारै लारै आयग्यौ। पण म्हैं उणरौ कुरतौ उतरावण लाग्यौ तौ वौ अेकदम रीसां बळतौ बोल्यौ– "पै'ली माथौ मत काढौ नै पै'ली बांयां उतारौ– यूं।" वौ आपरौ नैनौ–सीक हाथ ऊंचौ करनै बोल्यौ। म्हैं वौ कह्यौ ज्यूं पै'ली बांयां में सूं हाथ काढनै पछै उणनै बाल्टी रै कनै बिठायनै लोटौ भरनै उणरै माथा पर कूढण लाग्यौ, तौ अेक दम लोटौ म्हारै हाथ सूं झड़पनै फेंकतौ थकौ बोल्यौ– "पै'ली हाथां पगां रै मैल उतारै कै पै'ली माथा माथै पांणी नाखै? इतरा मोटा व्हैग्या तौ ई सिनान करावणौ ई नीं आवै। बाई तौ सब सूं पै'ली म्हारा हाथ–पग भिगोयनै धीरै–धीरै मैल करती। पछै मूंढौ धोयनै लाड करती अर पछै माथा माथै पाणी नाखती, अै तौ ले पाणी नै धड़ ड़ ड़ ड़। आ धापूड़ी ई रांड रोज यूं ईज करै, जरै ईज तौ म्हैं सिनान नीं करूं।"

म्हनै दुख में ई हंसणौ आयग्यौ। म्हैं कह्यौ– "ले भाई, बाई करावै ज्यूं ईज सिनान करावूंला थनै पछै तौ कांई नीं? म्हैं उण रा हाथ–पग भिगोयनै डरतौ–डरतौ धीरै–धीरै मैल काढण लाग्यौ। कांई भरोसौ, रीसां बळतौ अबकै लोटौ लेयनै म्हारा माथा में नीं ठरकाय दे। पण इसी कोई बात नीं व्ही। काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वौ बातां करण लाग्यौ– "बाई तौ म्हनै खोळा में बिठायनै धीरै–धीरै दूध पावती। गरम व्हैतौ तौ पै'ली आंगळी घालनै देख लेवती। फीकौ व्हैतौ तौ चाखनै खांड थोड़ी फेर नांखती। अर अे भाईसा तौ सांम्ही बैठनै माडांणी पाव। दूध में घी नांख देवै अर पछै जोर कर–करनै कैवै– 'पीऽ पीऽऽ।' अर आ धापूड़ी रांड लारै री लारै 'पीवै क्यूं नीं रे! पीवै क्यूं नीं रे... है ईज किसी रांड, डाकण व्है जिसी। रीस तौ इसी आवै कै रांड रा लटिया तोड़नै नांख दूं। म्हनै दूध में तारा देखनै ऊबका आवै। अेक दिन तौ उल्टी व्है जाती। पण नीं पीऊं तौ भाईसा कूटै। मामोसा बाई आवै जितरै थे अठै ईज रहीजौ, जाईजौ मती भलौ!"

म्हैं उणनै थावस देवतां कह्यौ– "अबै थूं खासौ मोटौ व्हैग्यौ है गैला, कोई बोबौ चूंघतौ नैनौ टाबर तौ है कोनी। आखौ दिन बाई–बाई कांई करै?"

उणनै फेर रीस आयगी। वौ मूंडौ चढायनै बोल्यौ– "नैनौ नीं तौ कोई थांरै जितरौ मोटौ हूं? बाई तौ अबै ई म्हनै रोज बोबौ चूंघायनै जावै।"

उण रा हाथ धोवती बखत उणरै चूस–चूसनै आलै कियोड़ै अंगूठै री म्हनै याद आयगी। हरदम मूंडै में राखण सूं अंगूठौ फोगीजनै धवळौ फट्ट पड़ग्यौ हौ। पै'ली तौ आ आदत नीं ही उणरी। म्हैं उणनै पूछ्यौ– "थनै बाई किण बखत बोबौ चूंघावण नै आवै रे किसनू?"

"किण बखत कांई, रोज रात रा आवै। घणी ताळ आंगणै रा नींबड़ा नीचै ऊभी रैवै। पछै होळै–होळै चालती म्हारै कनै आवै, म्हारौ लाड करै अर पछै गोदी में ऊंचायनै म्हनै बोबौ चूंघावै।"

"नित रोज आवै?"

"नित रोज।"

"कदैई गळती नीं करै?"

"अेकर म्हैं भाईसा रै सागै सूतौ हौ, उण रात बाई कोनी आई। नीं तौ रोज आवै।"

म्हैं उणनै सिनान करायनै कपड़ा पैराय दिया। बाल ठीक करनै आंख्यां में काजळ घाल्यौ तौ खासौ ठीक दीखण लाग्यौ। म्हैं कह्यौ– "देख भाणूं, यूं सफाई सूं रैवणौ, जिण सूं बाई थारौ घणौ लाड राखैला। अर यूं मैलौ–कुचैलौ घाण व्है ज्यूं रह्यौ तौ वा आवैला ई नीं।"

म्हारी बात उणरै हियै ढूकगी। घांटकी हिलावतौ बोल्यौ– "अबै रोज सिनान करूंला, कपड़ा ई नवा पैरूंला।"

धीरै–धीरै दिन ढळग्यौ। आंगणा रौ तावड़ौ रसोई रा नेवां माथै पूगग्यौ, नींबड़ा माथै पंखेरू किचकिचाट करण लागा। गवाड़ी में ऊभी टोगड़ी तांबाड़ण लागी अर जीजाजी रै घरै आवण री वेळा व्हैगी।

बाई रामसरण हुयां पछै वांरी कांई हालत ही, म्हैं सगळा समाचार सुण लिया हा। जे इण टाबरियां रौ बंधण नीं व्हैतौ तौ वै कदैई औ घरबार छोडनै नाठ गया व्हैता। पण आ अेक इसी बेड़ी ही जो काटियां नीं कटती ही। इण वास्तै नीं चावतां थकां ई वांनै दुकान माथै बैठणौ पड़तौ अर दोन्यूं बखत काया नैं पण भाड़ौ ई देवणौ पड़तौ।

टगू–मगू दिन रह्यां वै घरां आया अर म्हनै मिळनै काम में लागग्या। दिन आथमियां गाय दूय नै धापू रै हाथ रा काचा–पाका टुकड़ा खायां पछै बातां होवण लागी। बाई री चरचा आवतां ई वांरी आंख्यां जळजळी व्हैगी। वै बोल्या– "म्हारी चिंता नै म्हैं सहन कर सकूं हूं, पण आं टाबरियां रौ दुख सहन करणौ म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है। धापू नै तौ फेर कियां ई थावस देय सकां, समझाय सकां, उण रा दुख नै थोड़ौ हळकौ ई कर सकां, पण इण पसुड़ा नै कियां समझावां, इणनै कांई कैयनै धीरज बंधावां? इणरै दुख रौ तौ नीं दिन रा पांतरी पड़ै अर नीं रात रा। जिण विस्वास री डोर माथै औ जीवै है, वा जे आज टूट जावै तौ इणरौ जीवणौ कठण है, आ पक्की बात है।

जिण दिन सूं म्हैं इणरी मां नै खांधै चढाय पूगायनै आयौ हूं, उण दिन सूं लगायनै आज दिन तांई औ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवण री बाट उडीकै। मोटर पांच–दस मिनट लेट भलांई व्हौ पण इणरै जावण में जेज नीं व्है।

बोलतां–बोलतां फेर वांरौ गळौ भरीजग्यौ अर म्हारी आंख्यां पण जळजळी व्हैगी।

रामगढ म्हैं पूरा सात दिन ठहरियौ अर आठमै दिन रात री मोटर सूं रवांनै व्हियौ तौ किसनू उण बखत गैरी नींद में सूतौ हौ। म्हैं उणनै जगावण रौ विचार कियौ तौ दिमाग में अेक झटकौ–सो लाग्यौ। कुण जाणै बाई नींबड़ा रै नीचै ऊभी व्हैला कै गोदी में ऊंचायनै उणनै चूंघावणौ सरू कर दियौ व्हैला। सो सूतोड़ा रै ईज हळकौ–सीक वाल्हौ देयनै म्हैं रवांनै व्हैग्यौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

उडीक=बाट जोवणी। अबकाळै=अबकी बार। आंझो=अबखौ, दोरौ। हूंम=उमंग। बैम=भरम, बहम। आळाणौ=टाळणौ, रद्द करणौ। गोट=भतूळिया, आंधी रौ बवंडर। लारै=पाछौ। ढूकड़ौ=नैड़ौ, नजदीक। बैरो=कूवौ। अरणा=अेक तरै रौ रूंख, जिणरा पानां ऊंट घणै चाव सूं खावै। जेज=देर, मोड़ौ। वीरौ=भाई। छाजळा=सूपड़ौ। झेर=ऊंघ। घड़ा=ऊंची जगा। भांणू=भांणजा। कमेड़ा=अेक तरै रौ पंछी। वरत=रस्सी, लाव। मांदी=बीमार। छांनौ=लुक्योड़ौ, चुप। रमेकड़ा=रामतिया। थावस=धीरज। अैठवाड़ा=जूठा। वासण=बरतन, ठामड़ा। हाको=जोर री आवाज। माळौ=आळणौ, घोंसलौ। वीरौ=ब्याव रै टाणै गाईजण वाळौ भाई सारू गाईजतौ गीत। कोड=चाव, उत्साह। बाई=बैन। जामण=मां। लवारियौ=बछड़ौ। परसेवा=पसीनौ, पसेवौ। खोळा=गोद। लटिया=केस, बाल। तारा=घी रा तरवरा। ऊबका=उल्टी। घांटकी=गाबड़, गरदन। टोगड़ी=गाय री बाछड़ी, केरड़ी। टगू–मगू=थोड़ौ–सोक, चिन्हौ–सोक। वाल्हौ=प्यारौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. "अबकाळै उठै जावणौ घणौ आंझौ लाग्यौ।" इणरौ कारण हौ–
   (अ) बाई घणी मांदी ही (ब) मन री हूंस खतम हुयगी।
   (स) बाई री मौत सूं मन उदास हौ (द) रामगढ़ अळगौ घणौ हौ
   ( )
2. "अबै जावतौ उणनै थोड़ौ थावस बाधौ।" किसनू रै थावस बंधण रौ कारण हौ–
   (अ) उणरै मामोसा आयगा हा (ब) थैली भरिया रमेकड.ा लाया हा
   (स) बाई रै आवण री आस बंधगी (द) बाई री तबियत ठीक हुयगी।
   ( )
3. "किसनू नैं बाई रा ओढ़णा–बिछावणा मांय ही नींद आवती।" कांई कारण हौ–
   (अ) उण री आदत पड़गी ही (ब) अै कपड़ा उणनै आछा लागता
   (स) उणरै जीव नै नेहचौ रैवतौ (द) आं कपड़ा में बाई री बास आवती
   ( )
4. "जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो उणनै कियां तोड़तौ।" वा किसी उम्मेद ही–
   (अ) मामोसा आवणा री (ब) बाई रै घरां आवण री
   (स) थैली भरा रमेकड़ा पावण री (द) नानी रै घरां जावण री
   ( )

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. किसनू रै सुपना में आय'र बाई कांई करती?
2. किसनू रै नानीसा कन्नै चालण री बात क्यूं दाय कोनी आई?
3. "दस बरस री छोरी छह महीनां में ईज जाणै डोकरी व्हैगी ही।" धापू री इण हालात रौ कांई कारण हौ?
4. "म्हारी चिंता नै म्हैं सहन कर सकूं हूं पण टाबरिया।" आ बात कुण, किणनै अर क्यूं कही?

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. किसनू रोज किणरै सांम्ही मोटर माथै आवतौ?
2. किसनू नै छोरा कांई कैवता?
3. बाई नै किसौ गीत गावण रौ कोड हौ?
4. किसनू धापू रै हाथां सिनांन क्यूं नी करतौ?
5. मामोसा रवाना व्हिया जद किसनू कांई करतौ हौ?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. इण कहाणी रौ नांव (शीर्षक) कठै तांई वाजब है। खुलासौ करौ।
2. बिना मां रा टाबरां री कांई हालत होवै। खुलासौ करौ।
3. कहाणीकार री भासा–सैली पाठकां सांम्ही मारमिक चितराम उकेरिया है। स्पष्ट करौ।
4. किसनू रै जीवण में बाई रै जींवतां अर मरियां पछै आया फरक नै दाखला देय'र समझावौ।
5. उडीक कहाणी री मूळ–संवेदना नै आपरै सबदां मांय उजागर करौ।
6. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) अबै जावतां उणनै थोड़ौ थावस बाधौ। वौ आंख्यां पूंछतौ बोल्यौ– "म्हनै ई बाई खनै ले चालौ नीं मामोसा। म्हैं उणनैं कोई दुख नीं दूंला। बाई बिना म्हनै कांई चोखौ नीं लागै। अठै म्हनै भाईसा लड़ै अर धापूडी रांड म्हनै रोज कूटै। बाई तौ म्हारै हाथ ई नीं लगावती।

(ब) वै बोल्या– "म्हारी चिंता नै म्हैं सहन कर सकूं हूं, पण इण टाबरियां रा दुख नै सहन करणौ म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है। धापू नै तो फेर कियां ई थावस देय सकां, उणरै दुख नै थोड़ौ हळकौ ई कर सकां। पण इण पसुड़ा नै कियां समझावां, इणनै कांई कैयनै धीरज बंधावां?

23

कहाणी
कांचळी

रामेश्वरदयाल श्रीमाळी

कहाणीकार–परिचै

राजस्थानी रा सिरै कवि, कहाणीकार अर समीक्षक रामेश्वरदयाल श्रीमाळी बरसां लग राजस्थानी भासा रै लेखण अर आंदोलन सूं जुड़ियोड़ा हा। 1977 में उणां नै कहाणी–संग्रै 'सळवटां' माथै राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर रौ राजस्थानी साहित्य पुरस्कार मिळ्यौ। 1980 में कविता–संग्रै 'म्हारौ गांव' माथै साहित्य अकादमी, नई दिल्ली अर बरस 1995–96 में राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्क्रति अकादमी, बीकानेर रौ 'गणेशीलाल व्यास उस्ताद राजस्थानी पद्य पुरस्कार मिळ्यौ। श्रीमाळी री मोकळी कहाणियां रौ अंग्रेजी, हिन्दी अर बांग्ला भासा में उल्थौ होयौ। उणां री कहाणी 'जसोदा' टी.वी. माथै संसार री श्रेष्ठ कहाणियां कार्यक्रम सारू प्रदरसित करीजी। जाळोर जिलै रै मांय साक्षरता अभियान मांय सांतरौ काम करण सारू महामहिम राष्ट्रपति रै कर–कमलां सूं पुरस्कृत होया।

पाठ–परिचै

रामेश्वरदयाल श्रीमाळी री आ कहाणी मध्यम वरग री आरथिक स्थिति नै साम्हैं परतख पेस करै। समधा लाचार है, डोकरी है, फटेहाल गरीबणी है। मां विहूणी पुसबा री पाळणहार है। पुसबा रौ ब्याव करणवाळी है। पुसबा रौ ब्यांव भलां ई ढळती उमर वाळै सूं होयौ होवै, पण है पईसां वाळौ। बगत–बगत री बात। आज पुसबा रा दिन फुरियां वा सो'री–सुखी है। राजस्थानी रीत–पांत री पाळणा करती डोकरी आपरी गाढी पूंजी जंवार देय'र कांचळी रौ बटकौ लावै। बा मन मांय घणी राजी होवती हरख सूं पुष्बा रै घरै जाय वौ बटकौ नेग रै रूप में देवणौ चावै, पण उण कपड़ै नै देख पुसबा री प्रतिक्रिया सूं डोकरी झिंझोड़ीज जावै। डोकरी रै कोड नै धनबावळी पुसबा समझ नीं सकै अर वा कैवै कै म्हारै घरै अैड़ै कपड़ै नै कुण पैरै है धा! अर वा डोकरी री बिना गिनर करियां व्हीर होय जावै। कहाणी रौ अंत घणौ मारमिक है।

कांचळी

गाडरां जैड़ा धोळा केसां री बिखरयोड़ी लट सूं झूंपै रौ उळझ्योड़ौ खींपड़ै रौ तिरणौ पोपली आंगळ्यां सूं काढ, हाथ में अंगरेजी बांवळियै रौ बांकौ चिटियौ लेय, खाड़का पैर'र डोकरी समधा बारै निकळी। झूंपै रौ फळौ बीड़'र भंडारियां री दुकान सांम्ही चाली। झीर–झीर हुयोड़ौ गोडां लग रौ घाघरौ अर लीर–झाण हुयोड़ौ ओढणौ। ओढणौ घणौ मैलौ नै जूनौ, जिकौ रंग रौ ई कीं ठाह पड़ै नीं। अेक पल्लै संभाळ'र राख्योड़ा जुंवार रा दाणा।

झूंपै सूं बीसेक पग माथै हड़मानजी रौ थान। कीड़ी री चाल डोकरी चिटियौ हिलाती थान तक पूगी। थान कनै जाय'र धोक दी।

जुंवार रा च्यारेक दाणा पेड़लै माथै बिखेर'र डोकरी पाछी झूंपै सांम्ही वळी। बेरणौ उघाड़्यौ। खाड़का उतार्‌या। चिटियौ खूंणै में ऊभौ कियौ। धान संभाळ'र पाछौ मटकै में घाल्यौ। मटकै माथै ढक देय'र झूंपै बारै नीसर गवाड़ी में छोटी–सीक नीमड़ी री नाजोगी छियां में बैठगी।

ऊनाळै री रुत। हवा बंद। तपत घणी। नीमड़ी रै नीचै अेक लांबौ–लड़ाक कुत्तौ पड़्यौ जोर–जोर सूं सांस लेवै। कूतरै नै धुतकार'र चिटियौ सांम्हौ कियौ, पण कूतरौ किणी रिश्वतखोर बाबू ज्यूं निसरड़ौ हुय, जिकौ डोकरी री धुतकार नै धार्‌यां बिना ई चुपचाप आंख्यां मींच'र पड़्यौ रैयौ। डोकरी में घणौ सत कठै? वा पण अेक कांनी पसरगी।

समधा मन नै समझायौ– म्हारै कांई बाई! म्हारै तौ कोई धियौ न कोई पूतौ। म्हारै अठै कुण है जिकौ वै पाछौ देवै। कदैई करमां छाछ रै छांटै रौ काम पड़ै, जिकौ ई दो'रौ घालै। ...नै लारै जुंवार रही ई कठै बाई। अैड़ौ माणौ भरी हुवैली तौ दस–पंदरै दिन नीठ चालैली। पछै किणरै मूंडै सांम्ही जोवणौ? पोपली मूंडौ कर'र किणरै सांम्ही हाथ पसारां बाई! जिण पांतर तौ पुसबाड़ी नै बैंत कांचळी रौ कपड़ौ नईं दियौ, नै सात सुख! समधा अेक निरासा भर्‌यौ सैरकौ नांख्यौ।

समधा सूती पण मन नै जक कठै? कांई ठाह छोरी हेजाळी है, लाण माथै हाथ फेरावण नै आई तौ कांई हुवैलौ? जे खाली हाथ फेरूं तौ भूंडौ नीं लागै? भूंडौ तौ बाई लागै ईज! समधा रांड तौ कांई हुयौ? घर में कोई कमाऊ कोनी पण रोट्यां रौ देवाळ तौ द्वारका रौ नाथ है। दाणै–दाणै माथै खाणै वाळै री छाप उण लगाई है। मन तौ लोभ करै ईज! मन रौ कांई– मन लोभी मन लालची, मन चंचळ, मन चोर! पण मन रै मतै थोड़ौ ईज चालीजै।

चिटियै रौ सहारौ लेय'र समधा उठी। रेत झटकण घाघरै माथै हाथ झटक्यौ। झूंपै में गई। फाट्योड़ै ओढणै रै पल्लै में घणै जतन सूं जुंवार भरी। च्यार–छह दाणा बिखरग्या हा, उणां नै अेक–अेक कर चुग्या। अन्न देवता है। देवता नै पगां में कियां बिखेरां बाई! सूझतौ थोड़ौ हौ जिकौ जमीं माथै हाथ फेर–फेरनै सावळ जोयौ। दो–च्यार कांकरां नै ई जुंवार रै भरोसै घाल्या। मूण माथै ढक दीनौ। फळौ ढक'र दुकान कांनी जावण बारै नीकळी जद संतोख रौ अेक टुकड़ौ मूंडै माथै उतर्‌यौ– लाण पुसबा नै बैंत कांचळी तौ देवणी'ज चाईजै।

जोग री बात, डोकरी री आंख्यां डबडबायगी। अठै चाईजै जिकौ बठै ई चाईजै। नींतर नरबदा रै कोई जावण रा दिन हा? कितरी भली ही लाण! बोलती जरै फूल खिरता। जेठाणी–जेठाणी कैवती जीभ सुखावती ही लाण! अंग में आळस रत्ती–भर ई कोनी हौ। आखै दिन घोड़ै दांई दौड़ती फिरती। फगर–फगर काम करती। सगळां सूं बणाय'र चालती। फूटरीफरी! गीत–गाळ में हुंसियार! पण इसा मिनख ओछा दिन लिखायनै लावै! अेक दिन ताव आयौ, नै जाणै ही–क ही ई कोनी! सपनै वाळी बात बणनै रहगी। उण दिनां पुसबाड़ी पांचेक बरसां री हुवैली। हरनाथ म्हारै खोळै में नैनकड़ी लट नांख नै कैयौ हौ– "भाभी, बापड़ी अबोली जिनवार है, हमैं थे जाणौ। म्हैं तौ थांनै सूंप'र...। कह परौ गळगळौ हुय'र रोवण लाग्यौ।

सळ भर्‌योड़ै पोपलै मूंडै माथै मुळक री अेक रेख बिखरी। कैड़ी म्हारी छाती रै चिप'र छानी रही ही। जाणै सागी ई मां होवूं। औ ई कोई आगोतर रौ लैणियौ हुवै है। म्हारै साथळ नईं फाटी तौ कांई, सांवरियै रै औरतौ पूरौ करवावणौ हुवै तौ... चेहरै माथै उदासी री अेक बादळी ऊमटी अर बिना बरस्यां ई मारगै

बुही। निपूती हुवण री बात सूळ हुवै ज्यूं चुभी। बाळ–विधवा ही लाण!

अबै पुसबा कैड़ी फूटरी दीसै। कपड़ौ– लत्तौ कैड़ौ ओपै, जाणै इन्दर री अपछरा! गाल कैड़ा गुलाबी पड़्या है, लोही जाणै हमैं टपकै कै हमैं टपकै! चेहरै माथै नूर आयग्यौ! मूंडौ जाणै देखौ तौ देखता ईज रैवौ। च्यार दिनां पैली लटां में जुंवां रा माळा टिरता हा। म्हैं कह–कह नै थाकगी– अे पुसबाड़ी रांड, थारै इतरी–इतरी जुंवां टिरै। आव, माथौ परौ धोवूं। कैड़ौ मैलौ चिकार हुयौ है। कपड़ा पैरती तौ जाणै खूंटै रै परा टेरिया हुवै ज्यूं। पग री ब्याउवां सूं लोही बैवतौ। पण हमैं? . ..बगत–बगत री बात है।

पायली जुंवार देय'र डोकरी समधा बैंत भर्‌यो तापेटै रौ टुकड़ौ लाई। कांई करां बाई? बाणियै रौ बेटौ, लेतां ई खायनै देतां ई खाय। नींतर पायली धान रौ रोकड़ी सैकड़ौ रिपियौ हुवै, अर आगलै जमानै में रिपियै रौ तौ घाघरौ आवतौ– पूरौ अस्सी कळी रौ! पण इण जमानै रौ कांई करणौ? मिनखां मांयलौ तौ राम ईज परौ निकळ्यौ है। पण राम तौ लेखौ राखै है। आगलै भव में...।

तावड़ौ कीं मोळौ पड़्यौ। पुसबा हाल नीं आई। नैना टाबरां री मां है लाण, बगत ई कोनी मिळ्यौ हुवै। नींतर उणरौ जीव तौ अठैई पड़्यौ हुवैला। छोरी लाण लायकी वाळी है। कांई ठाह औ विचारनै ई नईं आई हुवै कै धा रौ अणूतौ ई रिपियौ खरच परौ हुवैलौ; कै कांई ठाह माथै हाथ फेरावण जावूं तौ डोकरी खाली हाथ पाछी मेलण सूं लाज मरैली। डोकरी रै अठै कमावण वाळौ कुण है? अणूता ई फोड़ा घालणा! भला मिनखां रा अै ईज लक्खण है। मिलण नै तौ अठै आई जरै मिळी'ज ही क! खिणेक रौ ई मिळणौ अर दिनां रौ ई मिळणौ। जावूं, कांचळी बैंत बटका जोगी तौ वा ई है परी' क! थो–थो, रामजी मा'राज, मां जिसी ई लायक हुवै। सुहागभाग अमर रैवै। पीळौ ओढै, मीठौ जीमै। पेट ठरै लाण रौ। रामजी माराज, घणौ ई दुख देख्यौ है। सैंग दिन किसा सीरखा रैवै बाई! अबै रामजी भला दिन देवै। लाल तापेटै रै पाव गज कपड़ै नै सामट–संभाळनै डोकरी पुसबा रै घर कांनी चाली। तांगिया खाती, आपरी जाण खाताई में।

मिनखां नै तौ किणरौ ई सुख सुहावै ई कोनी बाई! हरनाथ रै गरीब घर नै देखतां किणनै ठाह हौ कै छोरी नै अैड़ौ घर–वर मिळैलौ। पण रामजी सगळां रा ई दिन फेरै। मिनख भूंडियां कर–कर'र जात रौ ई मैल धोवै। जान आई जरै ई कच–कच सरू। मोटौ जोयौ बाई। तीजियांत है बाई। पचास बारै ऊमर है बाई। मिच–मिचियाती आंख्यां, थुलथुलौ डील है बाई। गाबड़ धूजै बाई। कोरौ धन ईज देख्यौ है बाई। सुवाग कोनी देख्यौ। बाप आपरौ घर भर्‌यौ बाई। बेटी रौ सुख कोनी जोयौ। मूंडै जितरी ई बातां! म्हैं कैवूं, आपौ–आपरा नसीब है। छोरी लाण आखी ऊमर में हमैं ईज सुख देख्यौ है। इणसूं बत्तौ घर–वर कांई देखै बाई। चोखी घर–गुवाड़ी। भण्यौ–लिख्यौ बींद। गांव में लेण–देण रौ धंधौ। च्यार–च्यार गायां–भैंस्यां दूझै। ताकड़ियां सोनौ तुलै। इणसूं बत्तौ पछै कांई देखै? सुवाग–भाग तौ भगवान रै हाथ में हुवै। मिनख बापड़ै रौ कांई इख्तियार? ऊमर तौ भगवान री घाल्योड़ी हुवै, नींतर सूरजड़ी नै देखौ क्यूं नीं, परणी नै डेढ महीनौ ई कोनी हुयौ, नै नसीब फूटग्या। मां–बाप जोध–जवान हीरौ हुवै जैड़ौ वर जोयौ; जाणै राजकंवर! पण भाग में नीं लिख्योड़ौ हुवै जद कांई हुवै अर आ पुसबाड़ी, मिनख बूढौ–बूढौ कैवता पण आंगणै दो–दो रतन रमै। चींधड़ हुवै जिसी ही पण राज करै!

डोकरी हरनाथ रै घर रै नेड़ी पूगी। आसरै सूं जंवाई नै नेड़ौ जाण घूंघटौ काढ्यौ। ओरणै री च्यार आंगळ पट्टी आंख्यां रै माथै टिरगी। फाट्योड़ी माथावटी सूं चिट्टा बांध्योड़ा धोळा केस ऊघड़ग्या।

पुसबा सासरै सारू बहीर हुवै ही। अेकण पसवाड़ै पावणा ऊभा। पचास बारै ऊमर पण शौकीनाई में अव्वल! परमसुख धोतियौ, टेरेलिन रौ झब्बौ। सोनै रा बटण लाग्योड़ा। काची मीमरी थकी आंख्यां माथै काळौ चश्मौ। हाथ में राजवियां वाळै दांई काम कियोड़ी चन्नण री छड़ी। आपौ–आपरा नसीब! डोकरी आपरै साद नै थोड़ौ ताबै कर होळै–सीक कैयौ– "बेटी, पुसबा बेटी!"

पुसबा आपरौ सामान बैळकी में रखवावती ही। उणनै डोकरी रौ हेलौ गिनारण री फुरसत ईज कठै? सगळा नग अेक–अेक कर'र सावचेती सूं गिणै। जे कोई सामान लारै रहग्यौ तौ इणां रौ सुभाव ईज बाळणजोगौ है। पैरण–ओढण में, खावण–पीवण में कितरौ ई खूटौ, मूंडै मांय सूं हरफ ई कोनी काढै, पण नुकसाण अेक रत्ती रौ ई दाय कोनी आवै। अेक–अेक सामान घोख–घोखनै याद करै।

डोकरी थोड़ी ऊतावळी थकी बोली– "पुसबाड़ी! हां अे बाला, सुणै ई कोनी अे!"

पुसबा रौ च्यार बरस रौ छोरौ डोकरी नै देख'र चमक'र रोवण लाग्यौ। छोरै नै रोतां देख'र पुसबा डोकरी रै सांम्हौ जोयौ। मन में विचार्यौ– डोकरी कीं रिपिया–पईसा मांगण नै आई हुसी। घर–धणी घणा दो'रा कमावै। रिपिया किसा रस्ता में पड़्या लाधै है, बाई! सुर में थोड़ी खीज भर'र कैयौ– "कांई कैवै है, धा!"

समधा चिटियै रै सहारै ऊभौ हुय'र हाथ हिलाय ओळभौ देती थकी बोली– "हां अे बाला, थूं तौ माथै हाथ फेरावण नै ई कोनी आई अे! सासरै जाती नै मिजाज आयौ बाई थनै तौ।" कैवतां–कैवतां सुर गळगळौ हुयग्यौ। आंख्यां रा कोयां में कोड सूं आलास छायग्यौ। पोपलै मूंढै सूं हंसती–हंसती घणै कोड सूं लायोड़ौ बटकौ सांम्हौ कियौ।

पुसबा देख्यौ, लाल तापेटै रौ बैंत भर्यौ बटकौ। औ अैड़ौ हळकौ कपड़ौ फेर कुण पैरैली? आज रै सुख में लारला दुख रा दिन किणनै याद रैवै? डोकरी रै कोड नै धन बावळी पुसबा कोनी परख सकी। उणरौ दोस ई कांई, पीसावाळां री दीठ में हर अेक बसत रौ मोल पीसां सूं आंकीजै। पुसबा री दीठ में बैंत कपड़ै री कीमत आठ आनां सूं बेसी अेक पीसौ ई कोनी ही अर माथै मण भर्यौ पहाड़– हरनाथा! थारी छोरी नै आवै जितरी ई बार कांचळी देयनै भेजूं!

रूखै सुर सूं कैयौ– "हमैं इणनै लायनै क्यूं तकलीफ देखी धा! म्हारै अठै औ तापेटौ कुण पैरैलौ?"

डोकरी रै कानां में जाणै उकळतौ तेल पड़्यौ! भावना रै गिगनां सूं हेठी ठोकीज बा चितबंगी हुवै ज्यूं हुयगी। उणनै अैसास हुयौ, वा गरीब है, उणनै सावजोग कपड़ौ कोनी जुड़ै। पुसबा जैड़ी अमीर घर री बहू नै बैंत कांचळी देवण रौ उणनै कोई हक कोनी!

समधा रा पग चिपग्या। पाखाण–पूतळी हुवै ज्यूं वा बठै ईज ऊभी रही, ईश्वर रै मांड्योड़ै व्यंग्य चितराम ज्यूं!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

गाडरां=भेड़ां, लरड़ियां। बांकौ=टेढौ। ठा=ध्यान, पतौ। वळी=मुड़ी। धिया=बेटी। भूंडौ=खराब। लाण=बेचारी। फूटरी=सुन्दर। आगोतर=पूर्व जन्म। अपछरा=अप्सरा। तावड़ौ=धूप। बहीर=रवाना। मिजाज=घमण्ड। धनबावळी=धन में गैली। हक=अधिकार। पूत=बेटौ। नेड़ौ=कनै, नजीक। नसीब=भाग। लक्खण=गुण। सगळां=सैंग। निसरड़ौ=जकै माथै असर नीं हुवै। पायली=धान मापण रौ बरतन। खाड़का=जूनी पगरखी। तापेटौ=टूल रौ हळकौ कपड़ौ।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. समधा अर नरबदा आपस में ही–
   (अ) जेठाणी–देराणी (ब) नणद–भाभी
   (स) सासू–बहू (द) भुआ–भतीजी
   ( )

2. नरबदा री मौत रै बखत पुसबा ही–
   (अ) पांचेक बरसां री (ब) तीनेक बरसां री
   (स) दसेक बरसां री (द) सातेक बरसां री
   ( )

3. हरनाथ पुसबा रौ सासरै में कांई देखनै ब्याव कर्‌यौ–
   (अ) चौखो घराणौ (ब) सासरै मांय धन
   (स) नेड़ौ सासरौ (द) जोड़ी रौ वर
   ( )

4. डोकरी नै देख'र पुसबा रै मन में कांई विचार आयौ–
   अ) मिळण आई होसी (ब) रिपिया–पईसा मांगण आई होसी
   (स) ओळबौ देवण आई होसी (द) सीख देवण आई होसी
   ( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. समधा किणरै थान जाय'र धोक दीवी?
2. पायली जंवार देय'र डोकरी कांई लाई?
3. डोकरी नै देख'र कुण रोवण लागौ?
4. समधा किणरै माथै हाथ फेरण नै गयी?
5. कांचळी रै कपड़ै नै तापेटौ कुण कैयौ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. पाठ रै आधार माथै समधा रौ चितराम आपरै सबदां मांय प्रकट करौ।
2. नरबदा रौ चरित्र–चित्रण करौ।
3. पुसबा रै घरधणी रै पेरवास रौ बखाण करौ।
4. 'समधा रा पग चिपग्या' इण कथन रौ खुलासौ करौ।

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''कहाणी 'कांचळी' सामाजिक संबंधां नैं उघाड़नै राख दिया है।'' इण कथन री समीक्षा करौ।
2. कहाणी रा कला अर भाव पख री दीठ सूं इण कहाणी री विवेचना करौ।
3. ''कहाणी 'कांचळी'' बूढा–बडेरां रै पेटै घटतै सम्मान नै उजागर करै।'' इण कथन सारू आपरी सहमति–असहमति नै उजागर करौ।
4. 'कांचळी' कहाणी मांय कहाणीकार आपरै उद्देस्य में कठै तांई सफळ रैयौ है। खुलासौ करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) पायली जुंवार देय'र डोकरी समधा बैंत तापेटै रौ टूकड़ौ लाई। कांई करां बाई? बाणियै रौ बेटौ लेतां ई खाय नै देतां ई खाय। नींतर पायली धान रौ रोकड़ौ रिपियौ हुवै अर आगलै जमानै में रिपियै रौ तौ घाघरौ आवतौ–पूरौ अस्सी कळी रौ। पण–इण जमानै रौ कांई करणौ रियौ?

(ब) डोकरी रै कानां में जाणै उकळतौ तेल पड़ियौ। भावना रै गिगना सूं हेठी ठोकी'ज वा चितबंगी हुवै ज्यूं होयगी। उणनै अहसास होयौ कै वा गरीब है उणनै सावजोग कपड़ौ को जुड़ै नीं। पुसबा जैड़ी अमीर घर री बहू नै बैंत कांचळी देवण रौ उणनै कोई हक कोनी।

कहाणी
थे बारै जावौ

करणीदान बारहठ

कहाणीकार–परिचै

करणीदान बारहठ रौ जनम सन् 1925 में फेफाणा (श्रीगंगानगर) में होयौ। श्री बारहठ रौ राजस्थानी कहाणीकारां मांय अेक लूंठौ नांव। कहाणियां साथै उपन्यास, नाटक अर कवितावां री रचना भी करी। अध्यापन रै साथै–साथै साहित्य–सिरजण री साधना करी। आपरी गिणावण जोग कृतियां है– मंत्री री बेटी (उपन्यास), राणी सती, शकुन्तला (नाटक), झरझर कंथा (काव्य), आदमी रौ सींग, माटी री महक (कहाणी–संग्रै), दायजौ, झिंडियौ (बाल–साहित्य) है। इणरै अलावा हिन्दी मांय कुहरा और किरणें, प्रेमलता, चाय के धब्बे, कलाई का धागा, खुरदरा आदमी इत्याद आपरा चर्चित उपन्यास रैया। बारहठ जी नै वांरै कहाणी–संग्रै 'माटी री महक' सारू साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ राजस्थानी पुरस्कार मिळ्यौ।

पाठ–परिचै

'थे बारै जावौ' करणीदान बारहठ री घणी सांतरी अर यथार्थवादी कहाणी है। इण में हर घर रै मोट्यार सूं बूढै होवतै आदमी री जीवण–दसा रौ लेखौ–जोखौ है। माईत कितरै हरख–कोड सूं बेटै नै परणावै अर नूंवी बीनणी घर मांय लावै। सासू–सुसरा कितरा राजी होवै। वा ईज बीनणी जद टाबरां री मां बणै तो उणरै पैरण–ओढण रै परिवेस में तौ बदळाव आवै ई, व्यवहार में ई काठी बदळ जावै। अर अठीनै सासू–सुसरा रै बुढापौ आवै जद वांनै खुद रै बणायोड़ै घर में ई उणां नै ठौड़ नीं मिळै। रात नै ब्याळू बिना भूखौ सोवणौ पड़ै। 'थे बारै जावौ' संसार री हकीकत नै चौड़ै–धाड़ै करती पाठक रै मन माथै सांतरौ प्रभाव छोडै।

थे बारै जावौ

म्हारै घरै जिकै दिन बीनणी आई वौ दिन म्हांनै आज भी याद है। उण दिन नै स्यात बीस साल रै नेड़ै–तेड़ै हुयग्या। म्हारी घरवाळी पदमा नै तौ इत्तौ कोड चढ्यौ कै वा तौ पूरै घर में ई कोनी नावड़ै ही– "छोरयां, जावौ अे, लुगायां नै बुलावौ। बारात आयगी। बीनणी आयगी। अे छोरी, तूं जा! थाळी ल्या... रोळी–मोळी ल्या... बीनणी नै बधावां।" लुगायां आयगी। थाळी आयगी। रोळी–मोळी आयगी। लुगायां गीत उगेर्‌यौ– म्हारै आंगणै बाजा बाज्या...। गीत गाईज्या। नेगचार हुया। फेर बीनणी घर में बड़ी।

बीनणी जद म्हारै घर रै आंगणै में काम करती, बीं रा छैलकड़ियां रा घूघरिया छमछम बाजता जणा म्हारौ जी–सोरौ हुवतौ। म्हैं उण छमछम नै सुणतौ। वा छमछम कानां रै जरियै म्हारै काळजै तांई पूगती जणां भगवान रै मिंदर री मधरी–मधरी घंट्यां बाजै अैड़ी लागती।

म्हैं आंगणै में बैठ्यौ रैवतौ। बठैई चाय पीवतौ। बठैई रोटी मांग लेवतौ। बठैई गपशप

करतौ रैवतौ। म्हारी घरवाळी कैरी–कैरी आंख्यां सूं म्हारै कांनी देखती। स्यात म्हैं उणनै सुहावतौ कोनी। पैली तौ वा टोकती संकती, पण छेवट उणनै कैवणौ ई पड़्यौ– "थे बारै जावौ, अठै बीनणी फिरै। थांरै थकां इणनै घूंघटौ काढणौ पड़ै। कदै ठोकर खायां पड़ जावै, टाबर तौ है ई। थे बूढा सारा अठै करौ कांई हौ?

जिकै दिन म्हनै लखायौ कै म्हैं बूढौ हुयग्यौ। म्हारौ हक आंगणै सूं उठग्यौ। घर आदमी रौ कोनी, लुगाई रौ हुवै। उण दिन सूं म्हैं बारलै कमरै में गयौ परौ। बारली बारी खोलली। गळी में आवतै–जावतै नै देखण लागग्यौ।

टैम टिपतां जेज कोनी लागै। म्हारी घरवाळी जिकै दिन म्हनै बूढौ बतायौ, म्हैं बूढौ कोनी हौ। म्हारै डील में जवानी वाळी सागी कड़क ही। म्हैं सावळ घूमतौ–फिरतौ, खेत में काम करतौ। बुढापौ तौ इत्तौ ई हौ कै म्हारौ छोरौ परणीजग्यौ।

दिन आयां बीनणी रै टाबर हुयग्या। जद उण आपरै छैलकड़ियां नै संभाळ'र बक्सै में मेल दिया। नूंवा गाभा पैरणा छोड दिया, बोदां में ई टोपा टिपाण लागगी। औ तौ जिंदगी में टैम आवै ई है। अबै पैरै भी कियां, वा कदैई टाबर संभाळती, कदैई घर रौ काम। उणनै काम सूं ई ओसाण कोनी मिळतौ। धीमै बोलण वाळौ बहम ई उण छोड दियौ। पोसावै ई कियां, टाबर जक कोनी लेवण दै। वै लड़ै तौ डांट लगावणी पड़ै। वा होळै बोलणै सूं पार पड़ै कोनी। घूंघटौ भी अबै नेम तोड़ण लागग्यौ। कदै राखती तौ कदै मूंडौ उघाड़ौ हुय जावतौ। मूंडै पर जिकी भोर में खिलतै फूलां री लावणी ही बा कीं तौ टाबर चूंघग्या, कीं बगत बुहार परौ लेयग्यौ। पण जिकौ मोटौ फरक आयौ वौ औ कै उण इण घर नै आपरी मुट्ठी में लेय लियौ। टैम री सूई वा घुमावै बठीनै ई घूमै। म्हारली बूढली कदैई उणनै हुकम देवती, पण अबै वा हुकम सारू उणरै मूंडै कानी ताकती– "बीनणी, म्हारै पीहर वाळां रौ कागद आयौ है। तूं कैवै तौ जावूं, नींतर टाळ करूं, है तौ ब्याव।"

जद बीनणी आपरै अफसरी लहजै में कैंवती– "थांरौ जावणौ जरूरी है तौ जावौ। थांरै सागी भाई रौ तौ ब्याव कोनी। क्यूं भाड़ौ लगावौ। थांरै गयां अै टाबर म्हारी जान नै रोवैला। सगळा थांरै हाड हिळ रैया है। कुण राखैला आंनै?"

म्हारी घरवाळी बीनणी रौ आदेस न मिलणै पर टाळ कर देवती, पण खुद नै जावणौ हुवतौ जणां वा आपरी सासू रौ आदेस कोनी चावती। फकत सूचना देय देवती– "म्हैं म्हारै पीहरै जावूं। आप डांगरां नै नीर दीज्यौ। गावड़ी दूध देवै है, दूध काढ लीज्यौ। बिलोवणौ हुवै तौ बिलोय लीज्यो, नीं टाळ कर दीज्यौ। अर आपरै टाबरां सागै बहीर हुय जावती।

टाबर जणै इण धरती पर उतरै, बेल बधै। उण रा टाबर ई बडा हुवणा ई हा। अर म्हैं जाणै अबै बुढापै कांनी बेगौ–बेगौ भाग रैयौ हौ, इयां लागै हौ।

दिनूगै उठूं। पाणी म्हारै सिराणै रैवै, पी लेवूं। आ म्हारी सदां री आदत है। कदैई होकौ भर लेवूं तौ कदैई बीड़ी सिळगा लेवूं। बीड़ी–होकौ पीवतां धांसी आवै, जिकी आवै ई। सागै बलगम आवै। हिम्मत कोनी रैयी कै उठ'र बारै थूंकूं। बठैई थूक देवूं। म्हनै म्हारै सूं ई घिरणा हुवण लागगी। बीनणी अर टाबरां नै तौ हुवणी'ज ही। अेक दिन बीनणी म्हांनै बोलती सुणीजी– "अबै बापसा, इण कमरै में रैवण जोगा कोनी रैया। आंरौ मांचौ बारली चूंतरी पर घाल दिया करौ, बठैई थूकता रैसी। कमरै रौ सत्यानास हुय रैयौ है। औ

कोई ढंग है!'' तौ कमरौ तौ म्हारौ बणायोड़ौ हौ, पण धणी और हुयग्या। पण उणरी बात साची ही। म्हारौ बणायोड़ौ कमरौ म्हारै हाथां नास हुवै हौ। अबै म्हारी घरवाळी रौ ई सत कोनी रैयौ। उण रा ई गोडा दूखण लागग्या। वा लाठी रै सहारै चालण लागगी। लोग कैंवता– ''इण बुढापै रौ कोई धणी–धोरी कोनी। इणरौ कीं नीं बटै। लोग इणनै मोल कांई, उधार ई कोनी लेवै। वौ बुढापौ म्हारै सिराणै–पगाणै आय'र ऊभौ हुयग्यौ।

पैली तौ म्हारै पैलै हेलै रौ असर हुवतौ। अबै पांच हेला ई अकारथ जावै। छोरा मूंडौ मंचकोड'र भाग जावै। बीनणी बांनै ललकारै जद कीं सुणै।

म्हैं रोज बारली चूंतरी पर सोवूं। बठैई छोरा म्हनै होकौ भर'र ला देवै। बठै ई पाणी पकड़ा देवै अर बठैई रोटी।

घरवाळा पैली म्हनै पूछ'र सब्जी बणाया करता, फेर वां वौ बैम ई छोड दियौ। पैली म्हैं ई रोटी में काण–कसर काढ दिया करतौ; म्हैं ई वौ बैम छोड दियौ। जैड़ी भी लूखी–सूखी आवती, खा लिया करतौ। काया नै भाड़ौ देवणौ हौ, दे दिया करतौ। ऊपर पाणी पी लिया करतौ। जवानी री बात और ही, बुढापै री बात और। बुढापै री खुराक ई बदळ जावै। दिनूगै कोई री सब्जी सूं रंजै कोनी। कीं छाछ–राबड़ी हुवै तौ पेट भस्योड़ौ लागै। काया तिरपत हुवै तौ हुवै, नीं हुवै तौ नीं हुवै। पाणी पी'र जी नै टिका लेवै। और जोर ई कांई चालै? बुढापौ सोचै– टैम टिप जावै तौ सही है। रात नै कीं दूध–खीचड़ी मिळ जावै, धान हळकौ हुवै तौ ठीक रैवै। नींद सावळ आवै। नीं तौ कदैई ऊदस उठै, कदैई जी दो'रौ हुवै, कदैई सांस उठै, कदैई नींद नीं आवै, पण टैम तौ टिपाणौ है, टिपावै। उपाव ई कांई?

अेक रात पतौ नीं कांई बात हुई कै रोटी आई'ज कोनी। म्हैं हेला ई मार्‌या, पण सुण्या कोनी। राम जाणै कांई हुयौ कै सगळै ई सून्याड़ हुयगी, जाणै च्यारूं कांनी सोपौ हुयग्यौ। पैली तौ भूख हेला मार्‌या, पण वा ई जपगी। म्हनै नींद रौ अेक गुटकौ आयग्यौ। भूख ई नींद मांगै, पण मांगै कद तांई? म्हैं जाग्यौ जणा भूख सागै जागगी। म्हैं दुखी हुयौ, मन में पछतावौ आयौ। सोचण लाग्यौ कै इण सूं तौ मौत आछी है। म्हैं रोटी सूं ई मूंघौ हुयग्यौ!

म्हैं हिम्मत कर परौ उठ्यौ। घर च्यारूं कांनी बंद हुय राख्यौ हौ। स्यात सगळां रै ऊपराकर नींद फिरगी। आसै–पासै कुतिया जागता रैवता, वै ई सोयग्या। म्हैं फेरूं मांची पर आय'र आडौ हुयग्यौ। आज कांई होयौ? घरवाळा म्हारी रोटी ई भूलग्या। म्हारी बूढली कठैई पड़ी हुवैली भेळी हुयोड़ी। उणनै सुणीजै नीं, सूझै नीं। उणरौ आपरौ बोझ ई कोनी संभै, म्हारली कुण सुणै? मन में विचार कर्‌यौ– छोरा भूलग्या दीसै। पण छोरा गया कठै? स्यात रामलीला घलै है गांव में, बठै गया दीसै। म्हैं आडौ होवूं। फेरूं बैठ जावूं। भूख नै नींद कठै? म्हैं फेरूं अेक गुटकौ पाणी पीयौ। फेरूं अेक बीड़ी सिळगाई।

इत्तै में दूर टाबर बोलता सुणीज्या। स्यात रामलीला खिंडगी। छोरा आवता हुवैला। बात साची निकळी। छोरा नैड़ा आयग्या। म्हैं हेलौ मार्‌यौ– ''अरे कुण है? घोटियौ है कांई?''

''हां दादा।''

साचाणी घोटियौ हौ।

''अरे घोटिया, म्हैं तौ भूखौ ई हूं।''

''अरे दादा, म्हैं तौ भूल ई गियौ।''

''वाह भाई, वाह!''

घोटियौ अर पूरणियौ मांयनै गया अर मां नै जगाई।

"मां, ओ मां! आज दादौ भूखौ ई है।"

"अरे मर मरज्याणा, म्हनै तूं काची नींद सूं जगा दी। तेरौ हिंयौ फूटेड़ौ हौ?"

वा बरड़ायां जावै ही। कैयां जावै ही। हुकम दियां जावै ही। बा फेरूं बोली– "अरे बीं हांडी में देख। कीं खुरचण पड़ी हुवैला, घाल दै। दूध रौ अेक पळियौ घालदै। गिट लेसी।"

म्हनै वा बरड़ावती सुणीजै ही। बोलती सुणीजै ही। हुकम देवती सुणीजै ही।

रात ठंडी ही, पण काया गरम ही, बोल गरम हा। म्हैं ना बोल सकै हौ, ना चाल सकै हौ, ना कीं कर सकै हौ।

छेवट उण अेक बात कही जिकी रा बोल काळजै गडग्या। बा बोली– "गांव रा सगळा बूढिया–बूढली मरग्या। आपां वाळां बूढियां नै मौत ई कोनी आवै। पतौ नीं, अै गळै रा हाड कद निकळसी?"

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

छेवट=आखिर। छैलकड़ियां=पाजेब, पायल। धणी=स्वामी, मालिक। उदस उठणौ=गळै में बळत लागणी। टिपतां=निकळतां। चूंतरी=चबूतरी, चौकी। बरड़ावणौ=चिरळावणौ। गिटणौ=माडांणी खावणौ। औसाण=अवसर, फुरसत। लावणी=फूठरापौ, सुंदरता। सिराणौ=सिरांथियै। पगाणै=पगां कांनी, पगांथियै। सुन्याड़=सुनसान। खिंडणौ=बिखरणौ, खतम होवणौ। काळजौ=हियौ।

सवाल

विकळपाऊ पड्यूत्तर वाळा सवाल

1. "थे बारै जावौ" औ कुण कैयौ?
   (अ) बीनणी (ब) बेटौ
   (स) छोस्यां (द) घरवाळी
   ( )

2. "म्हैं हेलौ मार्यौ– अरे कुण है?" अठै हेलै रौ संकेत किण सारू है?
   (अ) घरवाळी (ब) बीनणी
   (स) पोतौ घोटियौ (द) बेटौ ( )

3. फगत सूचना देय देवती– म्हैं म्हारै पीहरै जावूं। आप औ काम कर दीजौ। किसौ काम?
   (अ) आप डांगरां नै नीर दीज्यौ। (ब) खाणौ बणा लीज्यौ।
   (स) घरां फूस काढ लीज्यौ। (द) थेपड़ी थाप लीज्यौ।
   ( )

4. 'थे बारै जावौ' कहाणी रौ कहाणीकार कुण है?
   अ) विजयदान देथा (ब) मीठेस निर्मोही
   (स) करणीदान बारहठ (द) मालचन्द तिवाड़ी
   ( )

साव छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. ''बीनणी आई वौ दिन म्हांनै आज भी याद है।'' वीं दिन नै कित्ता साल होयग्या?
2. अबै बापसा, आप अठै रैवण जोगा कोनी रह्या।'' कुण किणनै कैवै?
3. घोटियौ रात नै कांई देखण नै गयोड़ौ हौ।
4. ''म्हैं दुखी हुयौ, मन में पछतावौ आयौ।'' अै विचार किणरै मन में आया?

छोटा पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. आप इण कहाणी रौ नायक किणनै मानौ अर क्यूं?
2. 'थे बारै जावौ' कहाणी रौ कांई संदेस है?
3. ''पतौ नीं अै गळै रा हाड कद निकळसी?'' अै सबद कुण किण सारू कैया?

लेखरूप पड्डूत्तर वाळा सवाल

1. इण कहाणी रौ कांई संदेस है? खुलासैवार लिखौ।
2. 'थे बारै जावौ' कहाणी मांय कथ्य, संवेदना अर सिल्प रौ अनूठौ मेळ है।'' दाखला देय'र समझावौ।
3. ''आ कहाणी बूढापै री पीड़ नै सांगोपांग ढंग सूं उजागर करै।'' कथन रौ दाखला देय'र खुलासौ करौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) टैम टिपतां जेज कोनी लागै। म्हारी घरवाळी जिकै दिन म्हनै बूढौ बतायौ, म्हैं बूढौ कोनी हौ। म्हारै डील में जवानी वाळी सागी कड़क ही। म्हैं सावळ घूमतौ–फिरतौ, खेत में काम करतौ। बुढापौ तौ इत्तौ ई हौ कै म्हारौ छोरौ परणीजग्यौ।

(ब) म्हैं हिम्मत कर परौ उठ्यौ। घर च्यारूं कांनी बंद हुय राख्यौ हौ। स्यात सगळां रै ऊपराकर नींद फिरगी। आसै–पासै कुतिया जागता रैवता, वै ई सोयग्या। म्हैं फेरूं मांची पर आय'र आडौ हुयग्यौ। आज कांई होयौ? घरवाळा म्हारी रोटी ई भूलग्या।